आपातकाल में सृजन फुलवारी

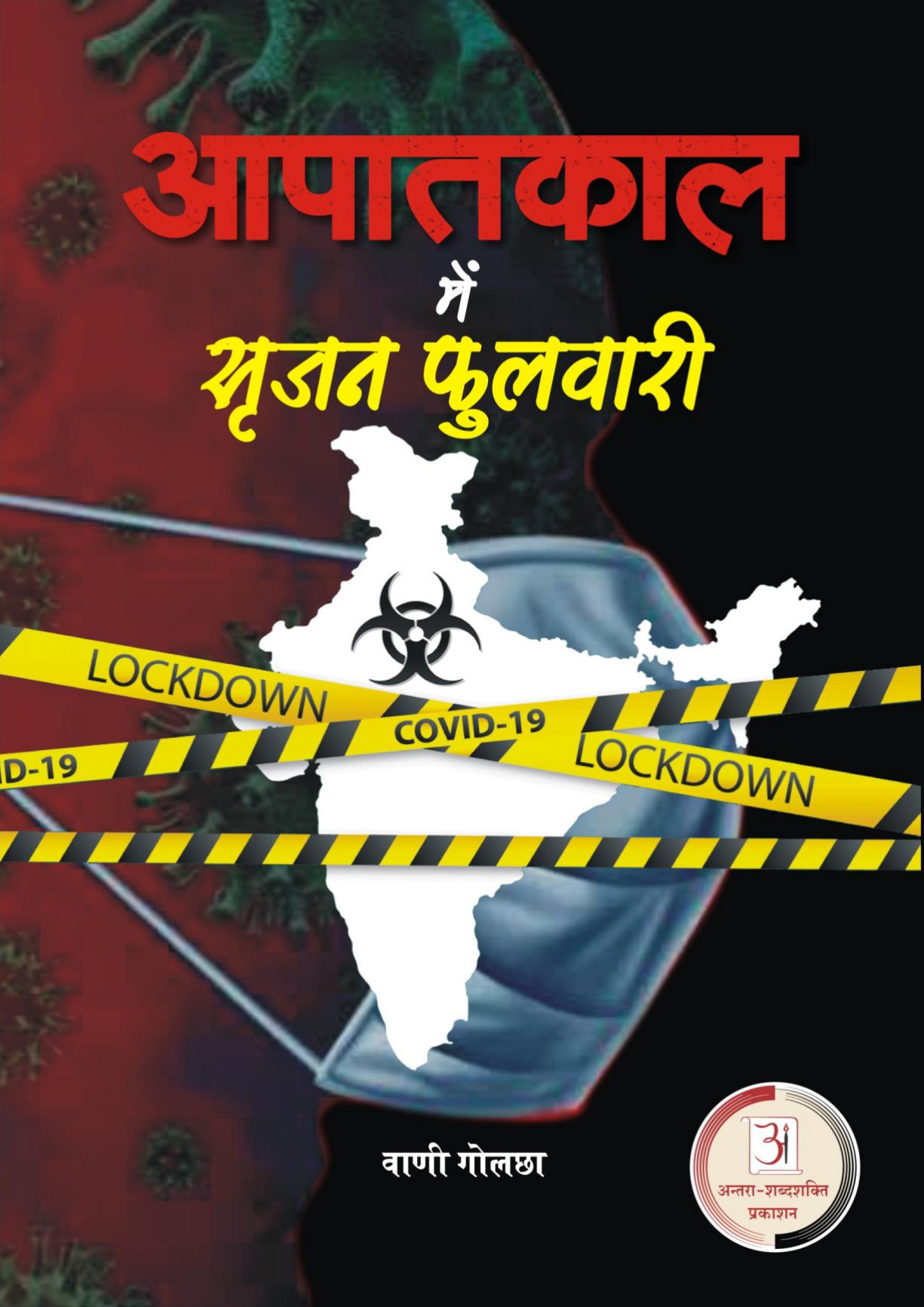

वाणी गोलछा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

वाणी गोलछा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-213-5
संपादक -डॉ .प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र संदीप कुमार सोनी -, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय -15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (.प्र.म)481331
दूरभाष (.कार्या) -07633-253159
मोबाईल -9424765259
ईमेल -antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट -www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण -2020, वाणी गोलछा
मूल्य -50.रूपये 00
मुद्रकशैलू कम्प्यूटर्स -, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY VAANI GOLCHA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	नारी	6
2.	दिल का सच्चा	7
3.	बचपन	8
4.	चश्मा	9
5.	गलतफहमियाँ	10
6.	हार	11
7.	कोरा कागज	12
8.	भारत माँ का लाल	13
9.	रात	14
10.	दिल	15
11.	नया साल	16
12.	मेरी माँ!	17
13.	वृद्धाश्रम	18
14.	बरसात	19
15.	मन	20
16.	प्रकृति की पुकार	21

नारी

जीव जन्म देकर कष्टों को सहने वाली है नारी,
चट्टान सी अडिग रहे जो, वो मूरत है नारी,

कठिनाइयों से संघर्ष कर वो जवान है नारी,
भट्टियों से तपकर निखरने वाला स्वर्ण है नारी,

कोमलता से भरी ममता का प्रतीक है नारी,
रिश्तों को मजबूत बनाने वाली नीव है नारी,

लक्ष्मी सी चपल, दुर्गा सी निडर वीरांगना है नारी,
कुप्रथाओं का बहिष्कार करे वो सावित्री है नारी,

कोयले के बीच रहने वाला हीरा है नारी,
हर रुप में सम्मान की अधिकारी है नारी।

दिल का सच्चा

वह क्यूँ गलत हो जाता है
जो दिल का सच्चा होता है

हर कोई गिराना चाहता है
वह फिर भी उठ जाता है

वह किसी से दर्द नहीं बाँटता है
अपने अंदर ही घुट जाता है

जिस दिन भी रो देता है
वह अंदर से टूट जाता है

वह सबके लिए बुरा होता है
फिर भी सदा मुस्कुराता है

दुनिया की नज़र में अनाड़ी हो वो भले ही
उसके अंदर भी छुपा एक कलाकार होता है

जब वह अकेला सा पड़ जाता है
तब वह खुद का ही दोस्त बन जाता है

वह नफरत तो लोगों से कर सकता है
फिर भी वह सबसे बस प्यार करता है

फिर भी न जाने क्यूँ?
वह गलत हो जाता है
जो दिल का सच्चा होता है।

बचपन

जो मासूमियत से भरा होता है,
वो होता है बचपन!
जहाँ अच्छे-बुरे का न हो फर्क,
वो होता है बचपन!

जहाँ हम दिल खोलकर हँसते हैं,
वो होता है बचपन!
जहाँ सब से सिर्फ प्यार मिलता है,
वो होता है बचपन!

जहाँ गुड्डे-गुड़िया होते हैं हमारे खास,
वो होता है बचपन!
जहाँ हर वक्त नादानी और मस्ती भरा हो,
वो होता है बचपन!

शायद जिंदगी का सबसे खूबसूरत पहलू
होता है बचपन!
जहाँ न पढ़ाई का टेंशन,
न दुनियादारी का बंधन,
जहाँ आज़ाद पंछी सा हो जीवन,
वो होता है बचपन!

चश्मा

आँखों पर वह चश्मा बोझ से लगता था
जब लोग चश्मिश, डबल बैटरी कहकर पुकारा करते थे।

नफरत थी मुझे उस चश्मे से
जो आज मेरी जरूरत है

और शायद यह सच्चाई है जिंदगी की,
लोग बुरे चेहरे को नापसन्द करते हैं,

जज करते हैं आउटर ब्यूटी से,
मुझे भी इसलिये वो पसंद न था,

पर मुझे उस चश्मे से प्यार हो गया
जब किसी ने इनर ब्यूटी से प्यार करना सिखा दिया

वह चश्मा आज भी बुरा है
मैं आज भी चश्मिश हूँ

फर्क सिर्फ इतना सा है-
कि अब वह बोझ नहीं
मेरा ऑल टाइम पार्टनर है।

गलतफहमियाँ

गलतफहमियाँ बदल जाती है झगड़ों में,
झगड़े बदल जाते हैं नफरत में।
यूँ ही रिश्ते टूट जाते हैं, गलतफहमियों के चलते!

ज़रा सा किसी ने कुछ कह दिया
तो हम चिड़चिड़े से हो जाते हैं!
हथियारों की तो जरुरत ही नहीं,
शब्द ही सब काम कर जाते हैं!
यूँ ही हम दूर हो जाते हैं, गलतफहमियों के चलते!

शांत रहकर सॉरी कह देना
हम जानते ही नहीं,
वो क्या है न!
ज़रा हमारा ईगो हर्ट हो जाता है!
और यूँ ही हम अपनों को गलत मान लेते हैं,
गलतफहमियों के चलते!

हार

किसी की खुशी के लिए हारना भी पड़े,
तो वह हार भी जीत बन जाती है!

लोगों की दृष्टि में शायद हार ही सही,
पर किसी के चेहरे की मुस्कान बन जाती है!
हताश हुए व्यक्ति के लिए एक उम्मीद और हौसला बन जाती है!
तो वह हार भी जीत बन जाती है!

हर वक्त जितने की वो बचपन वाली सीख,
हमारी जिंदगी बन जाती है,
आज जीत की अंधी दौड़ में,
हमें जिंदगी गंवाना मंजूर है, पर हार नही!
काश! बचपन में हारना भी सिखाया होता,
तो वह हार भी हमारे लिए जीत बन जाती!

कोरा कागज

कलम लिए मैं थी मैं बैठी,
कुछ नया लिखने की सोच में,
मन जरा विचलित सा था,
उस कोरे कागज को देख के।

आखिर क्यों नहीं कुछ सूझता,
मुझे इस बंद कमरे में बैठ के,
तभी कोरा कागज मुस्कुराया,
मानो वो कह रहा था मुझ से,..

समा लेता हूँ सब कुछ खुद में,
जैसे यूँ ही चुपचाप रह के,
बस तू भी हो जा मुझ सा शांत,
और खुद के भीतर झाँक ले।

भारत माँ का लाल

जय जवान, जय किसान था जिसका नारा,
ऐसा था वह भारत माँ का लाल दुलारा!

गांधी जी के सिद्धांतों को जिसने अपने आदर्श था बनाया,
ईमानदारी और इंसानियत की मूरत था वह,
भारत माँ का लाल दुलारा!

जीवन था जिसका सीधा-सादा
ग्यारह जनवरी को ताशकंद में खोया था
भारत माँ ने अपना वह लाल दुलारा!

मातृभूमि को किया समर्पित जिसने अपना जीवन सारा,
दुख की बात है, इतिहास के पन्नों में ही कहीं खो गया वह
भारत माँ का लाल दुलारा!

2 अक्टूबर सब को याद है 'गांधी जयंती' है
आज फिर से इतिहास के पन्नों को पलटने की जरुरत है,
याद दिलाना बहुत जरुरी, जन्मा था एक और सितारा!

नाम जिसका लाल बहादुर शास्त्री था,
जय जवान, जय किसान था जिसका नारा,
ऐसा था वह भारत माँ का लाल दुलारा!

रात

सितारों की चुनरी ओढ़े
आती है रात,
चाँद की शीतलता लिये
आती है रात।

रातरानी की महक
लाती है साथ,
शांतिदूत बनकर ही तो
आती है रात।

हर उजियाले के बाद
आती है रात।
इस सृष्टि को भागदौड़ से
बचाती है रात।

इसके आँचल में सभी
सोते हैं एक साथ!
भविष्य के सुनहरे सपने लिए
आती है रात।

दिल

फूलों सा नाजुक है ये मेरा दिल,
मायूसी के एहसास से ही मुरझा जाता है,
फिर आशा की लहरों पे खिल उठता है मेरा दिल,
छोटी-छोटी बातों पे रुठ जाता है मेरा दिल,..!

दर्द के ताप को सह नहीं पाता है,
मोम की तरह पिघल जाता है ये,
अधिक खुशी में भी ऑंसू बहता है मेरा दिल,
मैं खुद न समझ पाई क्या चीज है मेरा दिल,..!

अपनों को कभी खुशियां ये देता है,
और गम के आंसुओं को खुद पी लेता है,
कभी हँसाता, कभी रुलाता है, मेरा दिल,
मुझसे ही आँखमिचौली खेलता है मेरा दिल,..!

नया साल

जिंदगी के साथ नयी उम्मीदें लिये,
नयी रोशनी लिए आया है नया साल,

कहता है जियो जिंदगी नयी उमंग से,
मंजिल मिलेगी जिंदगी को नयी तरंग से,

गम के बादलों को तुम छोड़कर आओ,
खुशियों से भरी हुई बारिश में भीगने,

दुनिया भी भीग जाए इन खुशियों के रंग में,
शान्ति का संदेश भी लिये है संग में,

एक नयी आशा के साथ आया है ये साल,
हर सपने को साकार करेगा नया साल,

अधूरे सारे कामों को अंजाम ये देगा,
कामयाबी की ओर ले जाएगा नया साल।

मेरी माँ!

हमें इस दुनिया मे लाने के लिये सारे दुख सहती है माँ,
खुद रोकर भी हमें हँसाती है माँ!

खुद अंधेरे में रहकर भी हमारी जिंदगी रौशन करती है माँ,
हमें दुनिया की हर रीत सिखाती है माँ!

हर मुश्किल में हमारी ढाल बने खड़ी रहती है माँ,
आशीष और दुआओं का खजाना है माँ!

कड़कड़ाती ठंड में भी गीले बिस्तर में साथ सोती है माँ,
अपने बच्चों पर अपनी दुनिया लुटाती है माँ!

दुनिया के हर शब्दकोश से भी तेरा अर्थ बड़ा है माँ,
खुदा का दिया सबसे अनमोल तोहफा है 'मेरी मां!'

वृद्धाश्रम

कहते हैं जिसका कोई नहीं होता
उसका भगवान होता है!
फिर जिसका अंश पूरा परिवार होता है
उनके लिए वृद्धाश्रम क्यों होता है?

जो दिन-रात मेहनत करके,
पाई-पाई जोड़के,
एक मकान को घर बनाता है,
वृद्ध होने पर वही
उस घर से क्यों निकाल दिया जाता है?

जिस बच्चे के लिए कई रातें,
बिना सोए गुजार देता है,
आखिर कैसे उन्हें वृद्धाश्रम भेज
बच्चा चैन की नींद सो जाता है?
जो बचपन में बच्चे के लिये सबकुछ होता है
वृद्ध होने पर वह क्यों बोझ बन जाता है?

माता-पिता से मिली खुशियां
और प्यार को जब
लौटाने का समय आता है
तभी उनके लिए वृद्धाश्रम क्यों होता है?
क्या इसीलिए कहते हैं,
कहते हैं जिसका कोई नहीं होता
उसका भगवान होता है!

बरसात

काली घटाएं आयी है बरसात लिये!
बूंदों की बौछार अपने साथ लिये!

ये मोती की बूंदें ऐसे उतरी है धरती पर,
धरती भी महक उठी एक भीनी सुगंध लिये!

पंछियों ने अपने सुरों की सरगम से,
सृष्टि ने भी हरियाली के परिधान पहने!

किया है स्वागत आज बरसात का,
बरसात भी आयी है खुशियों की सौगात लिये!

मन

मन पर काबू पाने की बहुत की है कोशिशें,
पर न माना बहुत ही चंचल है मेरा मन!
आसमान को छूने की उमंग लिए उड़ान भरता है ये,
सचमुच एक उड़ता हुआ पंछी सा ही तो है ये मन!

शरीर यहाँ पर और मन है कहीं और,
न जाने मुझे कहाँ लिये जाएगा ये मन!
चाहता कुछ और है, करता है कुछ और,
गिरगिट की तरह रंग बदलता है मेरा मन!

भगवान से ये दुआ मांगती हूँ मैं,
दूसरों का भला ही सदा सोचे मेरा मन,
अपनी बुराइयों को पहचाने ये
दर्पण की तरह साफ रहे हमेशा मेरा मन!

प्रकृति की पुकार

रुओ रही है सोने की चिरैय्या,
पर उसके ऑंसू पोंछने वाला कोई नहीं!

जल रही है प्रकृति माँ की गोद,
पर उसे बुझाने वाला कोई नहीं!

पीड़ित है वनों का राजा और उसकी प्रजा,
पर उसे बचाने वाला कोई नहीं!

तड़प रहा है गंगा-यमुना का आँचल
पर उनकी तड़प मिटाने वाला कोई नहीं!

पुकार रही है इंसानियत करोड़ों को,
पर उसकी आवाज सुनने वाला कोई नहीं!

बदलना होगा हमें वरना
ये वक्त हमें जबरदस्ती बदल देगा!

शायद! कोविड-19 तो सिर्फ ट्रेलर है,
अब भी न सुधरे तो पूरी पिक्चर देखनी पड़ेगी!

जाग मानव, अब तो जाग!
प्रकृति खुद तुझे जगाने आई है!

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

इस आपातकाल की घड़ी में जब मैं बहुत बोर सी हो रही थी, लेखन के इस काम ने मुझे ऐसे व्यस्त कर दिया कि ये दिन पलक झपकते ही बीत गए। मुझे आज भी याद है जब प्रीति बड़ी मम्मी ने विश्व हिन्दी दिवस के दिन हिन्दी भाषा के महत्व पर हमसे निबंध लिखवाया था और उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम अच्छा लिख सकती हो। उस वक्त मैने इतना गौर नहीं किया पर इस आपातकाल में जब मैने उन्हें अपनी पहली रचना भेजी तो उन्होंने मुझे फटाफट १५ नई रचनाऐं भेजने को कह दिया। जैसे उन्हें मुझ पर पुरा विश्वास था कि मैं लिख सकती हुँ। उनके इस भरोसे से मुझमें एक जोश सा, जुनुन सा सवार हो गया था कि लिखना है और यकिन नहीं होता कैसे मैंने लिख डाला।

आपने ही मुझे प्रेरणा दी और मेरी प्रतिभा से अवगत कराया। मैं खुशनसीब हुँ कि मुझे 'अन्तरा शब्दशक्ति' में जुड़ने का मौका मिला। मैं तहे दिल से (दिल की अनंत गहराईयों से) अन्तरा शब्दशक्ति का आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मुझे मौका दिया और खास धन्यवाद उन्हें जो लोगों के लिए 'डॉ. प्रीति सुराना', 'एक साहित्य प्रेमिका' और भी बहुत कुछ, पर मेरे लिए तो मेरी ''बड़ी मम्मी'' हैं जो बच्चों के साथ बच्चों सी हो जाती है, और कभी-कभी प्यार से डाट भी देती है। मैं हमेशा उनकी ऋणी रहूँगी। मेरे पास आपके लिए और पूरे अन्तरा शब्दशक्ति परिवार को धन्यवाद कहने के लिए शब्द कम हैं। आप हमेशा मेरी लेखन की प्रेरणास्त्रोत रहेंगी, बहुत बहुत धन्यवाद

रचनाकार
वाणी गोलछा

शिवम् साड़ी सेंटर
रामपायली रोड़, वार्ड नं.०१
वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.)
Email- kshmajain7@gmail.com
Mobile - 9407808932

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-213-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/